

मह्यपभावक श्री वांछितपूर्ण पार्श्वनाथ

शत्रुंजा समो तीरथ नही,
रिखव समो नही देव।
गौतम
सरिख्रा गुरु नही,
वली वली वंदु तेह।।

भगवान पार्श्वनाथ योगी पुरुष होने के साथ-साथ एक ऐतिहासिक पुरुष भी थे, जिन्होंने ईसा पूर्व की नौवीं-दसवीं शताब्दी में भगवान महावीर के निर्वाण से लगभग 380 वर्ष पूर्व भारत के पूर्वांचल में प्रसिद्ध धर्मनगरी वाराणसी (काशी) में अवतरण लिया। आपने उपदेशों से न केवल जन-मानस में व्याप्त हिंसा आदि कुरीतियों को समाप्त किया, बल्कि कठोर तप साधना के द्वारा अपनी आत्मा का भी कल्याण किया।

प्रभु पार्श्व के समय धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के वैदिक क्रियाकांड और बाल तप किए जाते थे, जिसका मुख्य उदाहरण कमठ तापस द्वारा किया जाने वाला पंचाग्नि तप था। भगवान पार्श्वनाथ ने कमठ के उस झूठे कर्मकांड का विरोध किया और जनमानस में व्याप्त धार्मिक अंधविश्वास को दूर किया। तदुपरान्त प्रभु पार्श्वनाथ ने आत्म-कल्याण हेतु जिन-दीक्षा अंगीकार की और शान्ति एवं अहिंसा का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुँचाया।

जैनधर्म के चौबीस तीर्थकरों में आज सबसे अधिक प्रकट प्रभावी और व्यापक प्रसिद्धि वाले तीर्थकर पार्श्वनाथ हैं। भारत में जितने प्राचीन तथा नवीन जिनमंदिर भगवान पार्श्वनाथ के हैं, जितने स्तोत्र, स्तुतियाँ, मंत्र व भक्ति गीत भगवान पार्श्वनाथ से संबंधित हैं, उतने अन्य तीर्थकर के नहीं हैं। जैनों के अतिरिक्त हजारों अजैन भी भगवान पार्श्वनाथ की उपासना आराधना करते हैं।

